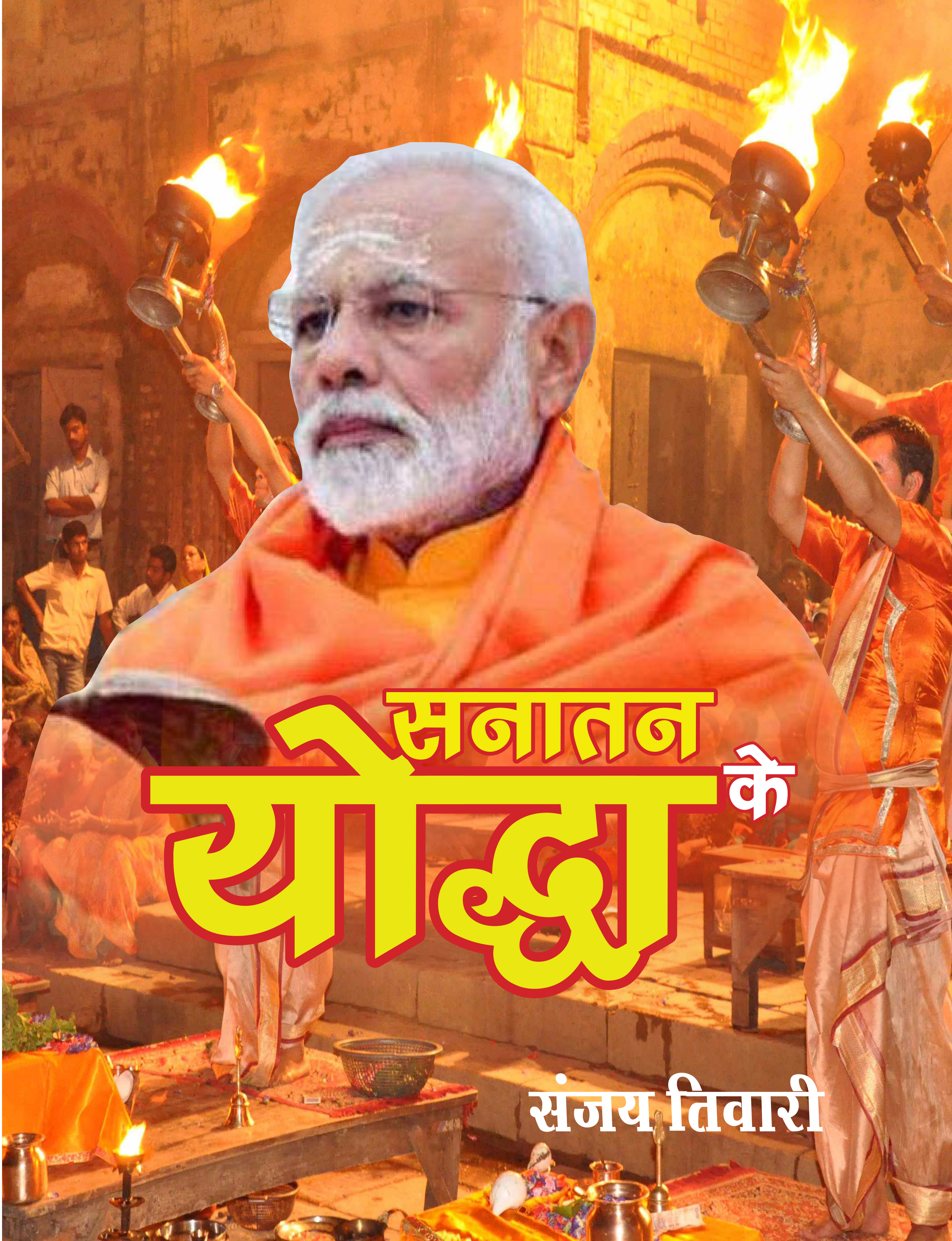
सनातन के योद्धा
संजय तिवारी

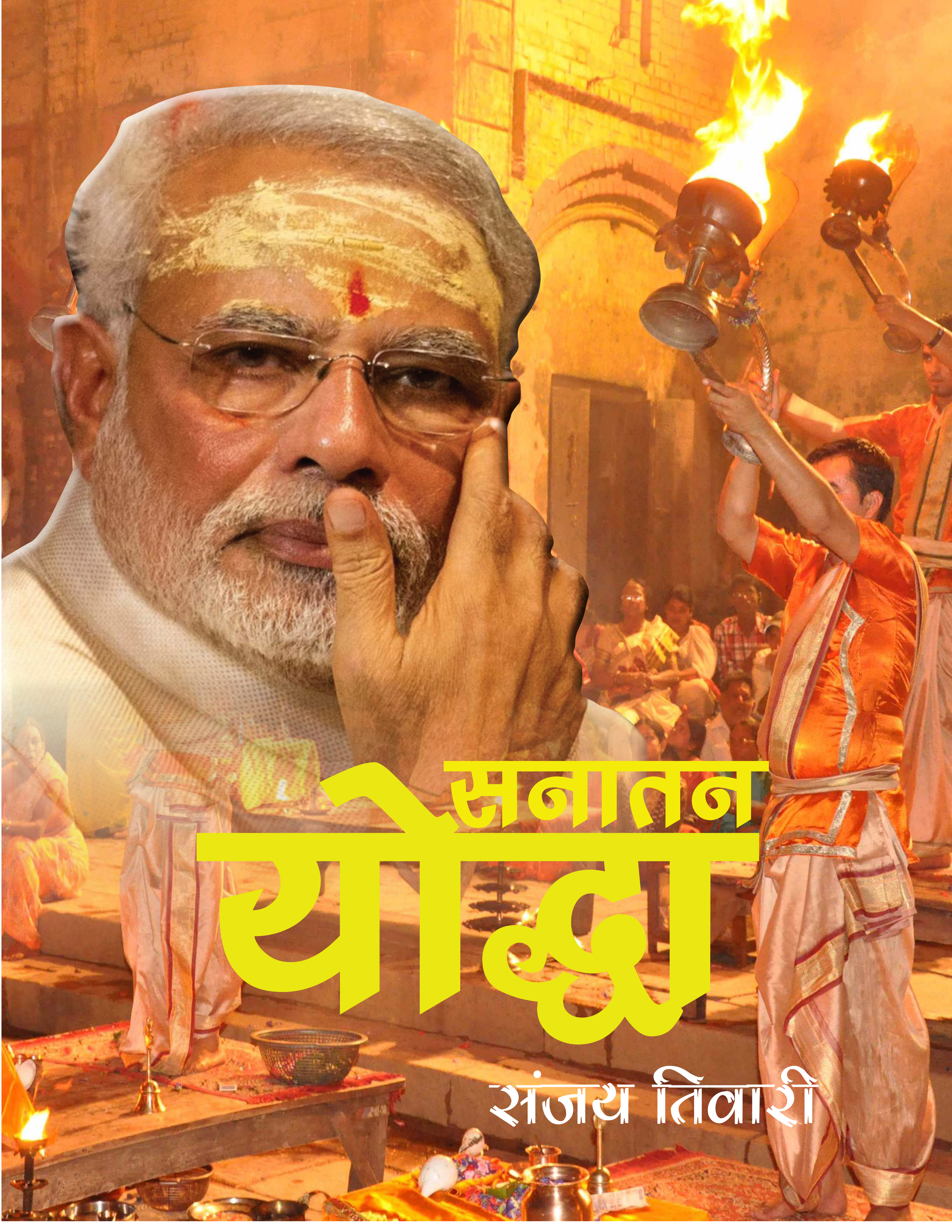

सनातन योद्धा

संजय तिवारी

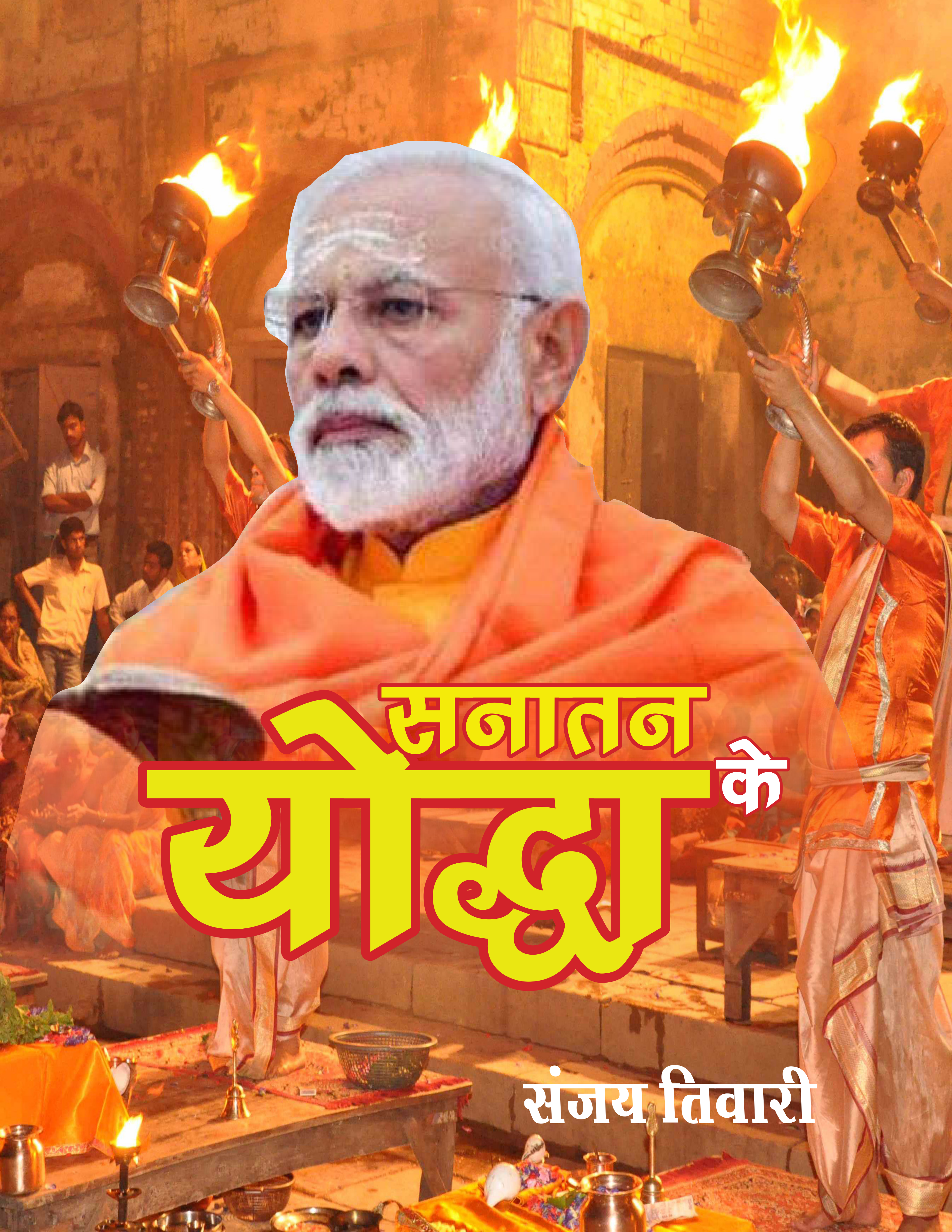
सनातन के
योद्धा
संजय तिवारी

सनातन का
महानायक
संजय तिवारी

सनातन योद्धा के

संजय तिवारी

प्रकाशक

समर्पण

उस जननी को

जिसने

सनातन के योद्धा

को

जन्म दिया

प्रकाशक का विवरण

आशीर्वाद

परमपूज्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज शंकराचार्य

सृष्टि में पंथों के प्रकाश में आने के साथ ही सनातन प्रवाह को संघर्ष का सामना करना पड़ा है। सनातन की सतत यात्रा यद्यपि अविराम चल रही है । विगत लगभग एक हजार वर्ष तक भारत पराधीन रहा है। इस कारण सनातन के प्रवाह की गति शिथिल हुई है। निरंतर आक्रमणों का सामना करना किसी भी संस्कृति के लिए संभव नही । भारत को लगातार होने वाले आक्रमणों ने बहुत कमजोर बना दिया । हमारी शास्त्रीय परंपराओं , ज्ञान, विज्ञान, कौशल, भाषा, साहित्य, राजनीति, अर्थशास्त्रर आदि सभी पर पराधीनता का प्रभाव पड़ा। अंग्रेजी साम्राज्य से आखिरी मुक्ति के बाद भी विगत 70 वर्ष हम अपनी पराधीनता के सभी प्रतीक ढोते रहे। बहुत परिश्रम से वर्ष 2014 में एक बड़ा बदलाव आया। पहली बार राष्ट्र को राष्ट्रीय शासक मिला। पांच वर्ष तक दुनिया ने भारत को बहुत तेजी से बदलते हुए देखा है।

अब इस महानायक ने नए भारत का निर्माण शुरू लार दिया है। एक आध्यात्मिक भारत बन रहा है। इसके निर्माता नरेंद्र मोदी स्वयं एक साधक, योगी, तपस्वी और सन्यासी है। वह भले ही

प्रधानमंत्री की कुर्सी पर हैं लेकिन हैं विशुद्ध सन्यासी ही।
मुझे यह लिखने में कोई संशय नही लगता कि सनातन की स्थापना का युद्ध लड़ रहे नरेंद्र मोदी के सामने अभी और भी चुनौतियां है। ऐसे योद्धा को केंद्रित कर एक पुस्तक की योजना बनाना और उसे साकार रूप देना बहुत कठिन कार्य है। एक प्रधानमंत्री या राजनेता को केंद्रित कर तो पुस्तक बहुत आसानी से लिखी का सकती है लेकिन एक ऐसे सन्यासी पर लिखना जिसके सन्यासी स्वरूप को समझने में ही बहुतेरे परेशान हो सकते है, बहुत कठिन कार्य है । सनातन की स्थापना का युद्ध के लेखक संजय तिवारी की लेखन और विश्लेषण क्षमता अद्भुत है। यह विषय लेकर पुस्तक की रचना करने की परिकल्पना ही विशिष्ट है।
सनातन की स्थापना का युद्ध पुस्तक स्वयं में एक इतिहास है। यह साहित्य की विशिष्ट धरोहर है। नई पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक है। इस पुस्तक की सफलता के लिए मैं परमपिता से कामना करता हूँ।

आशीर्वाद।

परमपूज्य स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज शंकराचार्य

ज्योतिष पीठ,
ज्योतिर्मठ बद्रीनाथ

मोदी और स्वामी जी की एक साथ फोटो लगनी है

भूमिका

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोई सामान्य राजनेता नही है। वह अपने भीतर और बाहर के व्यक्तित्व में भी कई भूमिकाओं में दिखते है। उनकी सोच, कार्यशैलीऔर क्रियाविधि बहुत ही अलग है। उनका फलक केवल भारत की सीमा ही नही है बल्कि अखिल विश्व उनके लिए एक कुटुंब के समान है। भारतीय चिंतन में वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा को वे केवल मानते ही नही हैं बल्कि जी कर दिखाते है। भारत वर्ष को सही मायने में नरेंद्र मोदी ने पहली बार भारत वर्ष को उसकी असली अस्मिता से परिचित कराया है। विगत लगभग एक हजार वर्षों की पराधीनता के कारण गुलाम बन चुकी मानसिकता की मोदी ने काफी हद तक बदल दिया है।देश मे सदियो के बाद विजेता का भाव जागृत हो पाया है।

नरेंद्र मोदी आज केवल भारत के प्रधानमंत्री या एक राजनेता ही नही हैं । उनके और भी अलग स्वरूपो से दुनिया परिचित हो रही है। एक शुद्ध सनातनी, ब्रह्मनिष्ठ, साधक सन्यासी का ऐसा विराट स्वरूप उन्होंने प्रस्तुत किया है जिसके सामने विश्व नतमस्तक है। भारत के चक्रवर्ती

सम्राटों की प्राचीन परंपरा को एक प्रकार से दुनिया आज देख रही है। एक शासक ऐसा भी है जो माँ गंगा का अभिषेक करता है, आरती करता है, बाबा विश्वनाथ का रुद्राभिषेक करता है , काल भैरव के दर्शन करता है। सभी से अनुमति लेता है । फिर राजकाज में लगता है।

यह नरेंद्र मोदी के विराट सनातन व्यक्तित्व का ही प्रतिफल है कि 2019 का प्रयाग कुम्भ विश्व के लिए एक अद्भुत आयोजन बन गया। दुनिया भर से आये 25 करोड़ श्रद्धालुओ के स्नान का कीर्तिमान बना। कोई असुविधा नही। कोई दुर्घटना नही। भारत की संत परंपरा को भरपूर सम्मान । ऐसा पहले कौन करता था। सत्ताएं सब कुछ केवल अपने लिए करती थीं। लोक कल्याण का साधक प्रधानमंत्री के रूप में भारत को मिला है तो यह सभी का सौभाग्य है।

भारत के प्रत्येक सनातन मूल्यों की अब स्थापना दिख रही है। सांस्कृतिक पराधीनता से राष्ट्र मुक्त हो रहा है। भारत के लोगो के भीतर विजेता का भाव स्पष्ट हो रहा है। विश्व भारत की शक्ति का लोहा मानने लगा है। कला , संस्कृति, विज्ञान, अंतरिक्ष आदि क्षेत्रो में भारत उन्नति कर रहा है। विश्व आज भारत से बहुत अपेक्षाएं करने लगा है। राष्ट्र की आर्थिक और सामरिक ताकत बढ़ी है। आतंकवाद का सफाया हो रहा है। दुनिया मे इस समय कोई ऐसा नही जो भारत की तरफ आंखे तरेर सके। सबसे बड़े शत्रु के रूप में पड़ोसी देश आज अत्यंत दुर्दिन में पहुच चुका है। भारत मे घुस कर आतंक की फसल उगाने वाले पाकिस्तान को अब हम उसकी सीमा में घुस कर सबक सिखा रहे है। यह नया भारत है । इसका निर्माण नरेंद्र मोदी जी कर रहे है। सीमाएं सुरक्षित है और राष्ट्र के भीतर की शांति भंग करने वाले शत्रु की ख़ैर नहीं। ऐसा आजादी के बाद पहली बार संभव हो सका है।

ऐसे में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व के गहरे पहलुओं को लेकर लिखी गयी इस पुस्तक को लेकर जिज्ञासा भी है और खुशी भी। आने वाली पीढ़ियों के लिए यह पुस्तक बहुत अच्छे मार्गदर्शक का कार्य करेगी। भारत के महामनीषी राजर्षि नरेंद्र दामोदर दस मोदी पर केंद्रित इस पुस्तक के लेखक संजय तिवारी को इस बात के लिए मैं बधाई देना चाहता हूँ कि उन्होंने मोदी जी के व्यक्तित्व के उन पहलुओं को उजागर करने का प्रयास किया है जिनको लेकर खास चर्चा नही होती। आलोचकों को उसमे कुछ और ही दिखता है। नरेंद्र की यह नरेंद्र तक कि ऐसी यात्रा है जिसको समझने के लिए एक सशक्त आध्यात्मिक दृष्टि चाहिए। यह कार्य वास्तव में संजय तिवारी जैसे संस्कृति एवं आध्यात्मिक चिंतक के वश का है। वैसे नरेंद्र मोदी जी पर अनगिनत पुस्तकें लिखी जा चुकी है लेकिन सनातन की स्थापना का युद्ध एक ऐसी विशिष्ट पुस्तक है जो नरेंद्र मोदी को ठीक से व्याख्यायित करती है। यह भारतीय साहित्य के लिए भी मील का पत्थर है।

शुभाशीष

जीतेन्द्रानंद सरस्वती
महामंत्री,
अखिल भारतीय समिति
एंव श्री गंगा महासभा, काशी

लेखक की बात

लेखक की बात

लेखक की बात

लेखक की बात

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

खण्ड 1

नरेंद्र मोदी की आध्यात्मिक यात्रा

प्रधानमंत्री की पूरी जीवन यात्रा के केंद्र में केवल अध्यात्म है। वह अपनी आध्यात्मिक शक्ति से ही अपने लक्ष्य साधते हैं। एक सामान्य संघ प्रचारक से भारत के प्रधानमन्त्री के सिंहासन पर दूसरी बार आसीन होने तक की उनकी यह यात्रा अद्भुत है। इसमें राजनीति सिर्फ एक साधन है। इसके केंद्र में सनातन परंपरा की आध्यात्मिक विरासत है। शिव और शक्ति के इस साधक को अपनी साधना और समर्पण पर अत्यंत भरोसा है। इसी भरोसे को वह सिद्ध भी करते हैं और दूसरो को इसमें विश्वास करने की प्रेरणा भी देते हैं। मोदी जी के जीवन को बहुत निकट से देखने वाले उनके सहयोगी और साथी उनकी इस साधक छवि को ठीक से जानते हैं।

उनकी यह यात्रा बहुत ही सलीके से चल रही है। ऊपर से देखने वालो को लगता होगा की वह गुजरात के मुख्यमंत्री पद पर तीन कार्यकाल बिताने के बाद वर्ष 2014 में केवल राजनीतिक कारन से काशी से चुनाव लड़ने आ गए। यह सही नहीं है। गुजरात से काशी आने और फिर काशी को केंद्रित कर अपने कार्यकाल को आगे बढ़ाने की पीछे उनकी साधक शक्ति और भावना है। जब 2014 में उन्होंने कहा कि *'मुझे न कोई लाया है न भेजा गया हूँ बल्कि माँ गंगा ने मुझे बुलाया है,'* तो यह आवाज उनके हृदय से निकली थी। यही वास्तविकता भी है। उनको यकीनन माँ गंगा ने ही बुलाया। क्यों बुलाया, उस वजह को उनके बीते पांच वर्षों के क्रियाकलाप से समझा जा सकता है। आज काशी का जो स्वरुप दिख रहा है वह पांच वर्ष पहले नहीं था। आज की काशी जिस रूप में विश्व को दिख रही है उस रूप को दुनिया ने इससे पहले नहीं देखा था। काशी विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर हो या माँ गंगा के घाट। हर काशीवासी को अब बेहद गर्व का अनुभव होता है। काशी का ऐसा जीर्णोद्धार चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बाद पहली बार हो रहा है। माता अहिल्याबाई ने अब से 600 साल पहले कुछ ठीक किया था। अब सबकुछ ठीक हो रहा है। अब मणिकर्णिका से बाबा विश्वनाथ के स्वर्णिम गुम्बद को देख कर हर सनातनी की आँखे भर जाती हैं। अब यहाँ गुलामी और आक्रमणों के चिह्न मिटा चुके हैं या मिट रहे हैं। यह नयी काशी है। सनातन का केंद्र। यही प्रमाणित कर रही है कि भारत में सनातन की स्थापना का युद्ध अपने नायक के नेतृत्व में अद्भुत रूप

में एक निर्णायक दिशा में बढ़ रहा है। शिव और शक्ति के साधक नरेंद्र मोदी को काशी किसने बुलाया और क्यों , इसका उत्तर अब दुनिया को मिल चुका है। आज उनकी प्रमाणिकता का अंदाजा इस बात से लगता है की बद्री केदार में दुनिया की रूचि बढ़ गयी है। अब बद्री केदार प्रशासन को लोगो से निवेदन करना पड़ रहा है कि वे अपनी यात्राएं धीमी करें। वह भीड़ बहुत बढ़ गयी है।

याद कीजिये जब इस बार काशी में मतदान हो रहा था उस समय मोदी जी ने केदार नाथ तीर्थ में गुफा की शरण ले ली थी। काशी में नामांकन के समय ही जब विद्वतजनों से वह मिले थे तभी कह दिया था कि यह चुनाव आपका है , आपको लड़ना है और जीतना है ,मई परिणाम के बाद ही आऊंगा। नामांकन के बाद वह आस पास के कई जिलों में आये , भाषण भी दिए लेकिन बनारस नहीं आये। जिस दिन वोट पड़ने थे उस दिन को उन्होंने भगवान् शिव की साधना को समर्पित कर दिया। परिणाम के बाद सबसे पहले उन्होंने अपनी माता जी से आशीर्वाद लिया ,फिर काशी आये। माँ गनगा की आरती की। बाबा विश्वनाथ का दर्शन पूजन किया। आखिर यह सब क्या साबित करते हैं। अपनी साधना और भक्ति पर उनका यह भरोसा ही सनातन को और महान बना देता है जो दुनिया के लिए बहुत ही आश्चर्यजनक लगता है।

एक साक्षात्कार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वयं अपनी निजी जिंदगी के बारे में एक बड़ा खुलासा किया है। उन्होंने बताया कि पहले वह आत्मचिंतन करने के लिए दिवाली के मौके

पर 5 दिन जंगल में गुजारते थे। पीएम मोदी ने बताया कि उस कवायद से उन्हें अब भी जीवन और इसके विभिन्न अनुभवों से पार पाने में मदद मिलती है। फेसबुक पेज 'ह्यूमन्स ऑफ बॉम्बे' पर एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने अपनी युवावस्था और जिंदगी के मकसद की तलाश के लिए अपनी आध्यात्मिक यात्रा के बारे में जानकारी साझा की। उन्होंने कहा, 'बहुत से लोग यह नहीं जानते, लेकिन मैं हर साल दिवाली पर पांच दिन के लिए दूर चला जाता था। कहीं जंगल में, जहां सिर्फ स्वच्छ जल हो और कोई व्यक्ति न हो. मैं इतना खाना अपने साथ ले जाता था कि वह पांच दिन तक काम आ जाए. वहां न अखबार रहता था, न रेडियो और इस दौरान टीवी और इंटरनेट भी नहीं रहता था। पीएम नरेंद्र मोदी ने अपनी कहानी बयान करते हुए ये भी बताया कि अकेले में बिताए गए वक्त से उन्हें जो ऊर्जा मिली है, वह जिंदगी के हर मोड़ पर उनके लिए मददगार साबित होती है. पीएम ने यह बताया कि लोग अक्सर मुझसे पूछते हैं कि आप किससे मिलने जा रहे हैं और मैं कहता था कि मैं खुद से मिलने जा रहा हूं।

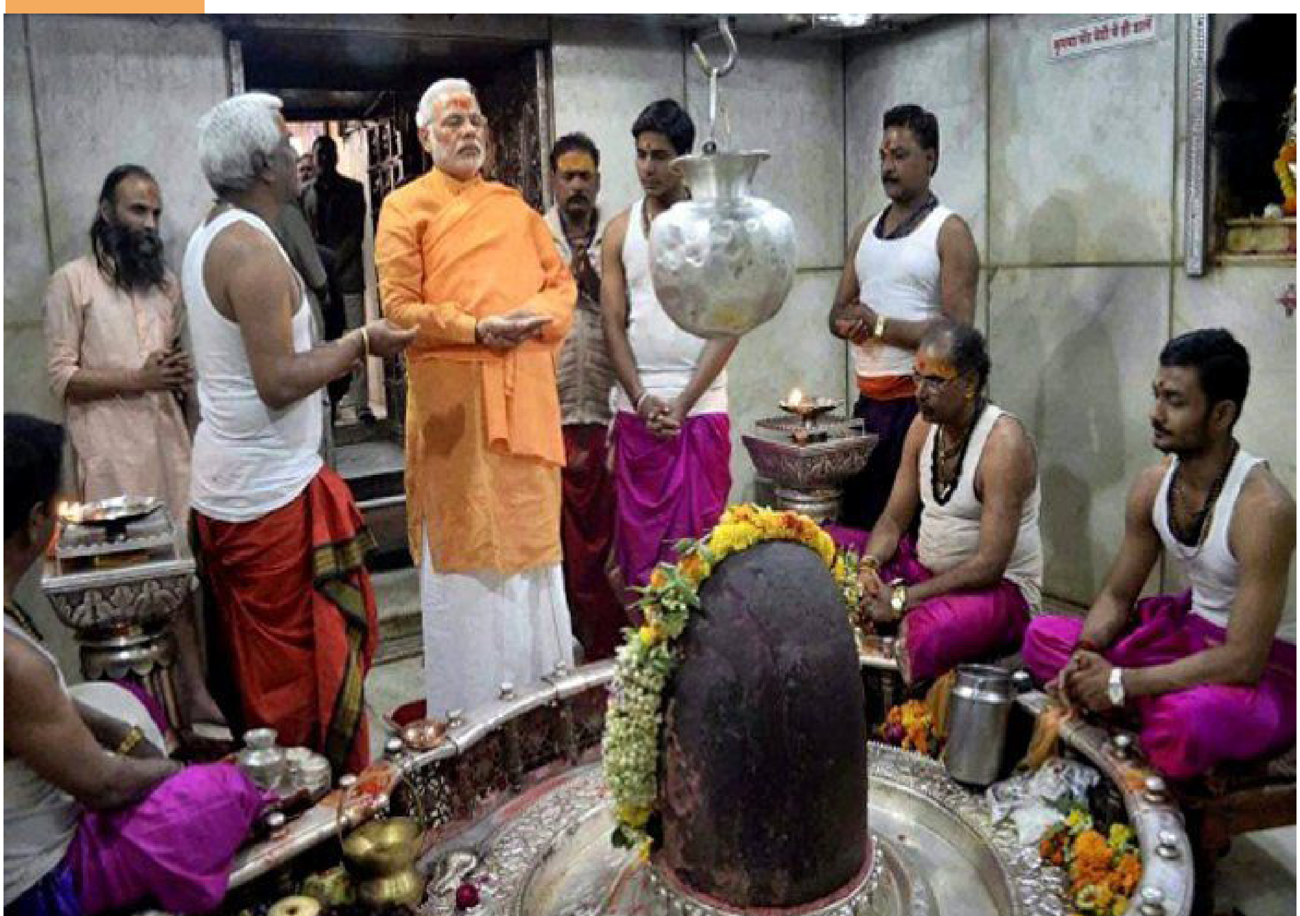

युवाओं को मोदी का संदेश

जिंदगी की भाग-दौड़ में व्यस्त युवाओं को सलाह देते हुए पीएम मोदी ने उनसे समय निकालकर आत्मचिंतन करने के लिए कहा. उन्होंने कहा, 'इससे आप की सोच बदल जाएगी और आप अपने अंतर्मन को बेहतर समझ पाएंगे. आप जीवन के वास्तविक रस का आनंद ले पाएंगे. इससे आपका विश्वास भी बढ़ेगा और दूसरे आपके लिए क्या कहते हैं इससे आप बेअसर भी रहेंगे. यह सभी चीजें आने वाले समय में आपके लिए मददगार होंगी। पीएम मोदी ने आगे कहा, 'मैं चाहता हूं कि आप यह याद रखें कि आप सभी खास हैं और रोशनी के लिए आपको कहीं बाहर देखने की जरूरत नहीं है...यह आपके अंदर है.'

हिमालय प्रवास

पीएम मोदी ने इस दौरान 17 साल की उम्र में हिमालय पर बिताए गए अपने दो साल के प्रवास को भी याद किया. उन्होंने कहा, 'मैं अनिश्चित, अनिर्देशित और अस्पष्ट था- मैं नहीं जानता था कि मैं कहां जाना चाहता था, क्या करना चाहता था और क्यों करना चाहता था. इसलिए मैंने भगवान के सामने खुद को समर्पित कर दिया और 17 साल की उम्र में हिमालय में चला गया.' उन्होंने कहा कि वह वहां गए जहां भगवान उन्हें ले जाना चाहते थे।

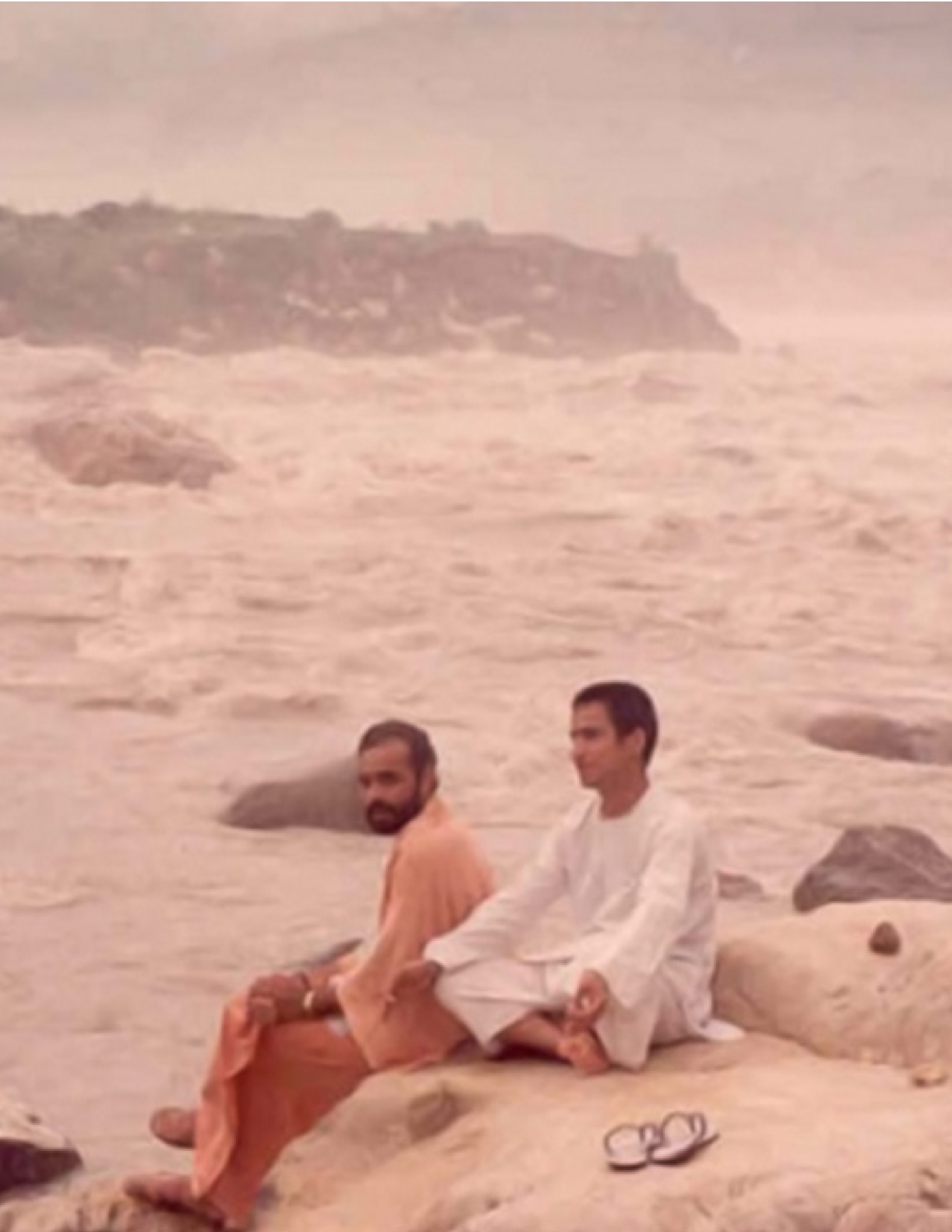

अपने इस प्रवास पर पीएम मोदी ने कहा कि यह उनके जीवन का एक अनिश्चितता भरा दौर था लेकिन (इसने) उन्हें कई जवाब दिए. पीएम ने कहा, 'मैं दुनिया को समझना चाहता था, खुद को जानना चाहता था. मैंने काफी यात्रा की, रामकृष्ण आश्रम में वक्त बिताया, साधु-संतों से मिला, उनके साथ रहा और अपने अंदर एक खोज शुरू की. मैं एक जगह से दूसरी जगह गया. मेरे सिर पर कोई छत नहीं थी, लेकिन कभी घर की कमी ज्यादा महसूस नहीं की.' उन दिनों की अपनी दिनचर्या के बारे में मोदी ने बताया कि वह 'ब्रह्म मुहुर्त' में तीन से पौने चार बजे के बीच जग जाते थे और हिमालय के बर्फीले पानी में स्नान करते थे, लेकिन इसके बावजूद उन्हें गर्माहट महसूस होती थी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इस आध्यात्मिक यात्रा में जिन आचार्यों, गुरुओ और साधको का दिशा निर्देश रहा है अब उनके बारे में थोड़ी चर्चा कर लेते हैं।

स्वामी दयानंद गिरि
निधन 24 सितम्बर 2015

हरिद्वार के ऋषिकेष में दयानंद सरस्वती आश्रम और कोयंबटूर में अर्श विद्या गुरुकुलम के शिक्षक रहे हैं। स्वामी दयानंद गिरि शंकर परंपरा के वेदांत और संस्कृत के आचार्य थे । उन्होंने करीब 50 सालोंतक देश और विदेश में वेदांत की शिक्षा दी और आज भी उनके द्वारा स्थापित आश्रमों में यह पुनीत कार्य चल रहा है। आज की समस्याओं का समाधान वेदांत के जरिए समझाने का नजरिया उन्हें औरों से अलग करता है। इसके चलते वह पारंपरिक और आधुनिक दोनों ही तरह के छात्रों तक आसानी से पहुंच बना लेते हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और दयानंद गिरि के बीच रिश्ता काफी पुराना है।इन दोनों को करीब से जानने वाले लोग बताते है कि हिमालय यात्रा के दौरान मोदी अपने इस आध्यात्मिक गुरु से मिले थे।प्रधानमंत्री बन जाने के बाद भी मोदी ऋषिकेश स्थित गुरु के आश्रम पहुंचे थे और अपने गुरु का हालचाल लिया था। काफी समय से बिमार चल रहे स्वामी

दयानंद गिरि का २४ सितम्बर २०१५ , बुधवार की रात ऋषिकेश में निधन हो गया। वह 87 वर्ष के थे। दयानन्द आश्रम के न्यासी स्वामी शांतात्मानन्द सरस्वती के अनुसार स्वामी दयानंद ने रात 10 बजकर 18 मिनट पर शीशमझाडी स्थित दयानंद आश्रम में अंतिम सांस ली थी । प्रधानमंत्री मोदी 11 सितंबर 2015 को अपने बीमार गुरु से मिलने के लिए ऋषिकेश गये थे। गुरु के निधन के समय वह विदेश यात्रा पर अमेरिका गये हुये थे स्वामी दयानंद का नरेंद्र मोदी के जीवन पर गहरा प्रभाव है और वह अपने गुरु की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहे हैं।

स्वामी आत्मस्थानंद महाराज
निधन 19 जून 2017

स्वामी आत्मानंद जी महाराज 22 वर्ष की उम्र में बेलूरमठ स्थित रामकृष्ण मिशन से जुड़े थे। मई, 2015 में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोलकाता आए थे तो उन्होंने अस्पताल जाकर आत्मस्थानंद महाराज से मुलाकात की थी। नरेंद्र मोदी किशोरावस्था में संन्यासी बनने बेलूरमठ

आए थे, लेकिन स्वामी आत्मस्थानंद महाराज ने यह कहते हुए उनके अनुरोध को खारिज कर दिया था कि उनकी कहीं और जरूरत है। रामकृष्ण मठ और मिशन के प्रमुख एवं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आध्यात्मिक गुरु स्वामी आत्मस्थानंद महाराज (99) का 19 जून 2017 , रविवार शाम लंबी बीमारी के बाद निधन हो गया। वे उम्रजनित बीमारियों को लेकर फरवरी, 2015 से दक्षिण कोलकाता स्थित रामकृष्ण मिशन सेवा प्रतिष्ठान में भर्ती थे।पीएम मोदी अपनी युवावस्था में संन्यासी बनने के लिए बेलूर मठ गए थे. वहां. उनके अनुरोध को स्वीकार नहीं किया गया था. उनसे कहा गया था कि उनकी जरूरत दूसरी जगह हैं. बाद में उन्हें राजकोट, गुजरात में स्वामी आत्म आस्थानंद का आध्यात्मिक मार्गदर्शन मिला

पश्चिम बंगाल के बेल्लूर मठ के अध्यक्ष स्वामी आत्माष्ठानंद महाराज को नरेंद्र मोदी के राजनीतिक गुरु के रूप में जाना जाता है। आज से 45 साल पहले घर छोड़कर संन्यासी बनने निकले मोदी बेल्लूर मठ पहुंचे थे, तब स्वामी आत्मास्थानंद ने ही उन्हें राजनीति और समाज की सेवा के प्रेरित किया था। प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी अपने राजनीतिक गुरु से मिलने गए थे।

योग गुरु- डॉ. एच. आर. नागेंद्र

बंगलुरु के डॉ. एचआर नागेंद्र 1980 से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के योग गुरु हैं। जो उन्हें योग और ध्यान की शिक्षा देते हैं। योग के प्रति मोदी का झुकाव काफी पहले से था। आज भी वह नियमित योग करते हैं। योग को बढ़ावा देने के लिए यूएन में योग दिवस के प्रस्ताव को दुनिया ने माना और इस साल पहली बार विश्व योग दिवस मनाया गया।

स्वामी विश्वेश तीर्थ जी महाराज

पेजावरा मठ के उत्तराधिकारी स्वामी विश्वेश तीर्थ जी को भी मोदी का गुरु बताया जाता है। उनका जन्म शिवाली जुलु ब्राह्मण परिवार में रामाकुंज में साल 1931 में हुआ था । यह बात बहुत कम लोगों को पता है कि अस्सी घाट पर स्थित उडुपि श्रीकृष्ण मध्व मंदिर मठ को मोदी के गुरु ने ही वर्ष 2004 में बनवाया था। शायद यही वजह है कि मोदी ने अपने स्वच्छता अभियान की शुरुआत इसी अस्सी घाट से शुरू की थी। इस मठ में कुल 20 कमरे हैं। इसमें खासतौर पर साउथ से आने वाले तीर्थ यात्री ठहरते हैं। खास बात ये है कि तीर्थ यात्रियों से इन कमरों का कोई किराया नहीं लिया जाता है, बल्कि किराये के बदले श्रद्धालु स्वेच्छा से दान करते हैं।

उडुपी मठ

उडुपी श्री कृष्ण मठ भारत के कर्नाटक राज्य के उडुपी शहर में स्थित भगवान श्री कृष्ण को समर्पित एक प्रसिद्ध हिंदू मंदिर है। मठ का क्षेत्र रहने के लिए बने एक आश्रम जैसा है, यह रहने और भक्ति के लिए एक पवित्र स्थान है। श्री कृष्ण मठ के आसपास कई मंदिर है, सबसे अधिक प्राचीन मंदिर 1500 वर्षों के मूल की बुनियादी लकड़ी और पत्थर से बना है। कृष्ण मठ को 13वीं सदी में वैष्णव संत श्री माधवाचार्य द्वारा स्थापित किया गया था। वे द्वैतवेदांत सम्प्रदाय के संस्थापक थे। किंवदंती है कि एक बार अत्यंत धर्मनिष्ठ एवं भगवान कृष्ण के प्रति समर्पित भक्त कनकदास को मंदिर में प्रवेश की अनुमति नही दी गई थी। इस बात ने उन्हें परेशान नहीं किया, बल्कि उन्होंने और अधिक तन्मयता के साथ प्रार्थना की। भगवान कृष्ण उनसे इतने प्रसन्न हुए कि अपने भक्त को अपना स्वर्गीय रूप दिखाने के लिए मठ (मंदिर) के पीछे एक छोटी सी खिड़की बना दी। आज तक, भक्त उसी खिड़की के माध्यम से भगवान कृष्ण की अर्चना करते हैं, जिसके द्वारा कनकदास को एक छवि देखने का वरदान मिला था।

माधवाचार्य के प्रत्यक्ष छात्र

माधवाचार्य के प्रत्यक्ष छात्रों की संख्या काफी थी। उनके पहले शिष्य थे श्री सत्या तीर्थ.अष्ट मठ के छोड़कर अन्य सभी मठ श्री पद्मनाभ तीर्थ द्वारा स्थापित किए गए थे। उनके शिष्यों को भगवान उडुपी श्री कृष्ण की पूजा करने का अधिकार नहीं है क्योंकि यह अष्ट मठों के यह नेतृत्व में और उनके द्वारा शासित है। 1.श्री विष्णु तीर्थ-सोडे मठ 2.श्री वामन तीर्थ-शिरुर मठ 3.श्री राम तीर्थ-

कन्नियूर मठ 4.श्री अडोकशाजा तीर्थ-पेजावरा मठ 5.श्री हृषिकेष तीर्थ-पलिमारु मठ 6.श्री नरहरि तीर्थ-अडामारु मठ 7.श्री जनार्दन तीर्थ-कृष्णापुरा मठ 8.श्री उपेंद्र

तीर्थ-पुट्टिगे मठ

दैनिक सेवाओं (भगवान को चढ़ावा) तथा कृष्ण मठ के संचालन का प्रबंध अष्ट मठों (आठ मंदिरों) द्वारा किया जाता है। अष्ट मठों में से प्रत्येक एक चक्रीय क्रम में दो साल के लिए मंदिर के प्रबंधन का कार्य करता है। उन्हें सामूहिक रूप से कृष्णमठ के रूप में जाना जाता है। कृष्णा मठ को अपनी धार्मिक रीतियों, परंपराओं और द्वैत या तत्ववाद दर्शन की शिक्षा के लिए दुनिया भर में जाना जाता है। यह साहित्य के एक रूप भी दासा साहित्य का भी केंद्र है, जो उडुपी में उत्पन्न हुआ है। ये आठ मठ पेजावरा, पुट्टिगे, पलिमारु, अडामारु, सोढे, कनियूरु, शिरुर और कृष्णापुरा हैं। इन अष्ट मठो के स्वामीजी और उनके उत्तराधिकारियों के नाम नीचे दिए गए हैः

मठ	स्वामीजी	उत्तराधिकारी
पेजावरा	श्री विश्ववेश तीर्थ स्वामीजी	श्री विस्वप्रसन्ना तीर्थ स्वामीजी
पालिमारु	श्री विध्यादिशा तीर्थ स्वामीजी	
अडामारु	श्री विश्वप्रिय तीर्थ स्वामीजी	
पुट्टिगे	श्री सुगुनेन्द्र तीर्थ स्वामीजी	श्री सुजनानेन्द्र तीर्थ स्वामीजी
सोढे	श्री विश्ववल्लभ तीर्थ स्वामीजी	
कनियूरु	श्री विद्यावल्लभ तीर्थ स्वामीजी	
शिरुर	श्री लक्ष्मीवरा तीर्थ स्वामीजी	
कृष्णापुरा	श्री विद्यासागर तीर्थ स्वामीज	

केदारनाथ मंदिर में पूजा करने और गुफा से बाहर निकलने के बाद पीएम मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री बना, तो उत्तराखंड में सरकार बनी। यहां तीन-चार महीने ही काम किया जा सकता है, हर समय बर्फ रहती है। इस धरती से मेरा एक विशेष नाता रहा है, कल से मैं गुफा में रहने एकांत के लिए चला गया था। उस गुफा से 24 घंटे बाबा दर्शन किए जा सकते हैं। वर्तमान में क्या हुआ मैं उससे बाहर था, अपने आप में था।

उन्होंने कहा कि विकास का मेरा मिशन, प्रकृति पर्यावरण और पर्यटन। आस्था और श्रद्धा को और अधिक संभालने के लिए क्या कर सकते हैं, आध्यात्मिक चेतना में इजाफा नहीं कर सकते हैं

लेकिन रुकावटे डालने से रोक सकते हैं। मैं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से काम का जायजा लेता रहता हूं।

पीएम ने कहा कि कपाट खुलने से पहले सैकड़ों लोगों को काम करना पड़ता है, आम लोगों की सुविधा का ध्यान रखना पड़ता है। मैं कभी कुछ मांगता नहीं, मांगने की प्रवृत्ति से सहमत नहीं हूं। प्रभु ने हमें मांगने नहीं देने योग्य बनाया है।

प्रधानमंत्री की शक्ति साधना

नवरात्र में मोदी देवी की उपासना को किसी भी सूरत में नहीं टालते। मोदी कहीं भी हों, किसी भी पद पर रहे हों, देश में हों या विदेश में नवरात्र के पहले दिन से वो उपवास पर रहते हैं। कठिन व्रत के साथ मोदी मां दुर्गा की पूजा करते हैं। दिनचर्या में थोड़ा बदलाव जरूर होता है क्योंकि मोदी नौ दिनों तक पूरी श्रद्धा से नवरात्र करते हैं। नवरात्र के दिनों में मोदी सुबह 5 बजे की जगह 4 बजे ही उठ जाते हैं और फिर योग करते हैं। योग के बाद मोदी ध्यान और पूजा करते हैं और फिर हर दिन की तरह ही पूरी एनर्जी के साथ अपने काम में जुट जाते हैं। 2012 में मोदी ने अपने ब्लॉग में बताया था कि वो पिछले 35 साल से नवरात्र में नौ दिन तक व्रत रखते हैं। मोदी के मुताबिक वो आत्म-शुद्धिकरण के लिए व्रत रखते हैं। उनके मुताबिक इस व्रत से उन्हें शक्ति मिलती है और साथ ही वो हर रात मां दुर्गा से संवाद करने में सक्षम हो पाते हैं। मोदी की नवरात्र को लेकर ऐसी आस्था है कि वो हर नए काम की शुरूआत भी नवरात्र में ही करते हैं। यही वजह है पिछले साल असम में हुए विधानसभा चुनाव प्रचार की शुरुआत उन्होंने असम की मशहूर कामाख्या माता का पूजन करने के बाद की थी।

प्रधानमंत्री की साधना का एक महत्वपूर्ण स्थल है माँ अम्बा जी का मंदिर। आज यह मंदिर

अपने प्राचीन स्वरुप के साथ ही नवनिर्माण से अद्भुत साधनास्थल के रूप में विक्सित हो चुका है। अम्बाजी माता मन्दिर भारत में माँ शक्ति के 51 शक्तिपीठों में से एक प्रधान पीठ है। यह पालनपुर से लगभग 65 कि॰मी॰, आबू पर्वत से 45कि॰मी॰, आबू रोड से 20 किमी, श्री अमीरगढ़ से 42 कि॰मी॰, कडियाद्रा से 50 कि॰मी॰ दूरी पर गुजरात-राजस्थान सीमा पर अरासुर पर्वत पर स्थित है। अरासुरी अम्बाजी मन्दिर में कोई प्रतिमा स्थापित नहीं है, केवल पवित्र श्रीयंत्र की पूजा मुख्य आराध्य रूप में की जाती है। इस यंत्र को कोई भी सीधे आंखों से देख नहीं सकता एवं इसकी फ़ोटोग्राफ़ी का भी निषेध है। मां अम्बाजी की मूल पीठस्थल कस्बे में गब्बर पर्वत के शिखर पर है। बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां तीर्थयात्रा करने वर्ष पर्यन्त आते रहते हैं, विशेषकर पूर्णिमा के दिन। भदर्वी पूर्णिमा के दिन यहाँ बड़ा मेला लगता है।

अम्बाजी मन्दिर हिन्दुओं की 51 शक्ति-पीठों में से एक है। देवी की 51 शक्तिपीठों में से १२ प्रमुख शक्ति पीठ इस प्रकार से हैंः- मां भगवती महाकाली मां शक्ति, उज्जैन, माँ कामाक्षी, कांचीपुरम, माता ब्रह्मरंध्र, श्रीशैलम में, श्री कुमारिका, कन्याकुमारी,महालक्ष्मी मंदिर, कोल्हापुर,

देवी ललिता, प्रयाग, विन्ध्यवासिनी देवी, विन्ध्याचल, विशालाक्षी, वाराणसी, मंगलावती, गया एवं मां सुंदरी, बंगाल में तथा गुह्येश्वरी नेपालमें। गब्बर पर्वत गुजरात एवं राजस्थान की सीमा पर स्थित है। यहां पर पवित्र गुप्त नदी सरस्वती का उद्गम अरासुर पहाड़ी पर प्राचीन पर्वतमाला अरावली के दक्षिण-पश्चिम में समुद्र सतह से 1,600 फीट (490 मी॰) की ऊंचाई पर 8.33 कि॰मी2 (3.22 वर्ग मील) क्षेत्रफ़ल में अम्बाजी शक्तिपीठ स्थित है। यह 51 शक्तिपीठों में से एक है जहां मां सती का हृदय गिरा था। इसका उल्लेख "तंत्र चूड़ामणि" में भी मिलता है। इस गब्बर पर्वत के शिखर पर देवी का एक छोटा मंदिर स्थित है जिसकी पश्चिमी छोर पर दीवार बनी है। यहां नीचे से 999 सीढ़ियों के जीने से पहाड़ी पर चढ़कर पहुंचा जा सकता है। माता श्री अरासुरी अम्बिका के निज मंदिर में श्री बीजयंत्र के सामने एक पवित्र ज्योति अटूट प्रज्ज्वलित रहती है।एक नजर नरेंद्र मोदी शिव भक्ति पर

पशुपतिनाथ मंदिर

अगस्त 4, 2014: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल की यात्रा की. इस दौरान उन्होंने भगवान पशुपति नाथ मंदिर में पूजा-अर्चना की, प्रधानमंत्री ने वहां रुद्राभिषेक और भगवान शिव की पूजा की।

शिव प्रतिमा का अनावरण

फरवरी 24, 2017ः महाशिवरात्रि के पावन मौके पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कोयंबटूर में बनी भगवान शिव की 112 फुट ऊंची प्रतिमा का अनावरण किया.

सोमनाथ मंदिर

मार्च 7, 2017: गुजरात दौरे पर गए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमनाथ मंदिर में आरती की. प्रधानमंत्री बनने के बाद पीएम मोदी पहली बार सोमनाथ मंदिर पहुंचे. इससे पहले वह 1 फरवरी 2014 को सोमनाथ गए थे.

काशी विश्वनाथ

मार्च 4, 2017ः उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनावों के अंतिम दौर में उन्होंने काशी विश्वनाथ मंदिर जाकर भगवना शिव की पूजा-अर्चना भी की. 2014 के लोकसभा चुनाव से पहले भी मोदी ने यहां आकर पूजा अर्चना की थी.

लिंगराज मंदिर

अप्रैल 16, 2017ः प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भुवनेश्वर के प्रसिद्ध लिंगराज मंदिर में पूजा की. इस मंदिर के बारे में कहा जाता हैं कि देवी पार्वती ने यहां पर लिट्टी व वसा नाम को दो राक्षसों का वध किया गया था.

महाकाल उज्जैथन

01 जून 2011ः तब गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी महाकाल की नगरी उज्जैन पहुंचे. मोदी सुबह 8.30 बजे एयरपोर्ट पर उतरे और सीधे महाकाल मंदिर पहुंचे. मोदी यहां पर एक विशेष अनुष्ठान में शामिल हुए, यह अनुष्ठान 1 घंटे तक चला.

मां कामाख्या

अप्रैल 8, 2016 : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने असम विधान सभा चुनावों के दौरान अपनी चुनाव प्रचार मुहिम की शुरुआत ही नीलाचर पर्वत पर स्थित मां कामाख्या देवी के ऐतिहासिक मंदिर में पूजा करके की थी.

वैष्णो देवी

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 26 मार्च 2014 की सुबह वैष्णो देवी मंदिर में प्रार्थना की. श्री मोदी ने सांझीछत से वैष्णो देवी तक यात्रा की और वहां प्रार्थना की.

भगवान वेंकटेश्वर

3 जनवरी 2017ः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भगवान वेंकटेश्वर के मंदिर में पूजा करने पहुंचे थे . प्रधानमंत्री ने वहां मंदिर के अंदर पवित्र स्वर्ण वेदिका और पवित्र स्वर्ण ध्वजस्तंभ पर पूजा की. वह करीब 20 मिनट मंदिर में रहे.

खण्ड
2

सनातत की स्थापना का युद्ध

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नये आध्यात्मिक भारत की आधारशिला रखने वाले महानायक के रूप में उभर कर दुनिया के समाने आये हैं। भारत के लगभग 5000 वर्षों के इतिहास में कृष्ण की महाक्रान्ति (महाभारत युद्ध) के बाद पहली बार आचार्य चाणक्य ने भारत की अखण्डता और संस्कृति के लिये अलख जगाई थी। यौवनों के विरूद्ध राष्ट्र को लड़ने योग्य बनाने के लिये आचार्य को स्वयं लम्बा युद्ध करना लड़ना पड़ा था। आचार्य चाणक्य के बाद पुष्यमित्रशूंग ने भारत में सनातन की स्थापना के लिये क्रान्ति की। उसके लगभग एक हजार वर्ष बाद भारत पर विदेशी आक्रांताओं का आधिपत्य हुआ और लगभग एक हजार वर्षों तक की पराधीनता ने हमें सांस्कृतिक रूप से भी पराधीन बना दिया। ब्रिटीश हुकूमत से मुक्ति के बाद भी लगभग सात दशक तक हम वैसा कुछ नहीं कर पाये जिससे हमारी सांसकृतिक अस्मिता को पुर्नजीवित किया जा सके। लोकतांत्रिक भारत में 26 मई 2014 को जब राष्ट्राध्यक्ष के रूप में नरेन्द्र दामोदार दास मोदी ने संसद

की डेहरी पर दण्डवत कर प्रवेश किया तब एक उम्मीद जगी थी। वह उम्मीद विश्वास में बदलती गयी और राष्ट्र को यह आभास हो गया कि भारत की सांसकृतिक आध्यात्मिक सनातन परम्परा की स्थापना का युद्ध शुरू हो गया है। इस युद्ध के महायोद्धा के रूप में राष्ट्र नरेन्द्र दामोदर दास मोदी को देख रहा है। राष्ट्रप्रमुख केय रूप में मोदी के पांच वर्ष के कार्यकाल के बाद देश मे नई सरकार के लिये जब चुनावो की घोषणा हुई उस समय यह युद्ध एक निर्णायक स्वरूप की तरफ बढ़ने लगा। यह आभास हुआ कि वर्ष 2019 का लोकसभा चुनाव केवल एक चुनाव नहीं है बल्कि सभ्यताओं के संघर्ष में विलुप्त से होने लगी सनातनता की स्थापना का युद्ध है। सनातन की स्थापना के युद्ध को चुनावी परिवेश में पहचानने में कोई दिक्कत नहीं हुई । युद्ध का स्वरूप विस्तार और उसकी परिणति साफ दिख रही थी। उसी चुनावी अवधि में लिखे गये आलेख तिथिवार प्रस्तुत किये जा रहे हैं ....